Result Mitra Daily Magazine

ईरान का परमाणु कार्यक्रम

❖ हालिया संदर्भ :

- ईरान के उप–विदेश मंत्री 2015 के परमाणु समझौते के संभावित पुनरुद्धार पर चर्चा करने के लिए जिनेवा में अपने यूरोपीय समकक्षों से मिलने वाले हैं।
- यह बैठक ईरान के उस प्रस्ताव के विफल होने के बाद हो रही है, जिसमें ईरान ने अपने यूरेनियम संवर्धन को 60% शुद्धता तक रखने की पेशकश की थी, जो परमाणु हथियार बनाए जाने के लिए आवश्यक स्तर से थोड़ा कम है।

❖ महत्व :

- यह वार्ता समाप्त हो चुके 'संयुक्त व्यापक कार्ययोजना' (JCPOA) पर विस्तृत बातचीत के 2 साल के अंतराल के अंत का प्रतीक है।
- ईरान के अनुसार, यह प्रस्ताव पश्चिमी देशों के साथ विश्वास बहाल की दिशा में एक प्रमुख कदम है।
- इस बैठक में यूरोपीय संघ के अलावा फ्रांस, जर्मनी एवं UK के प्रतिनिधि भाग लेंगे, वहीं चीन, रूस एवं USA जैसे देश के प्रतिनिधि इसमें मौजूद नहीं रहेंगे।
- ईरान ने भले ही यह आश्वासन बार-बार दिया है कि उसका परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए है, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) ने ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर विशेष चिंताएं जताई है।

- IAEA के महानिदेशक राफेल मरियानो ने चेतावनी जारी करते हुए कहा कि ईरान के पास पर्याप्त मात्रा में हथियार ग्रेड यूरेनियम है, जिससे अगर वह चाहे तो कई परमाणु बम बना सकता है।

❖ तनावपूर्ण दौर :

- ईरान का परमाणु कार्यक्रम एवं पश्चिमी देशों, विशेषकर USA के बीच रिश्ते तब खराब हुए, जब 2018 में तत्कालीन US राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने समझौते से हटने का निर्णय लेने के साथ-साथ ईरानी अर्थव्यवस्था को चौपट करने के लिए कई कठोर आर्थिक प्रतिबंधों की घोषणा की।
- USA के इस कदम के जवाब में ईरान ने समझौते के अनुपालन में धीरे-धीरे कमी करना प्रारंभ कर दिया।
- वर्ष की शुरुआत में USA के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने चेतावनी दी थी कि ईरान का 'ब्रेक आउट टाइम' घटकर एक दो सप्ताह रह गया है, जो USA द्वारा आधिकारिक रूप से स्वीकारा गया सबसे कम समय–सीमा है।

  Note :– 'ब्रेकआउट टाइम' का तात्पर्य परमाणु हथियार के लिए पर्याप्त विखंडनीय सामग्री के उत्पादन में लगने वाले न्यूनतम अवधि से है।

❖ ईरानी परमाणु कार्यक्रम का गठन :

- ईरान के परमाणु कार्यक्रम की गठन की शुरुआत 1970 के दशक में हुई, जो तेल संपदा तथा औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी उन्नति के लिए ईरान के शाह के दृष्टिकोण से प्रेरित था।
- अमेरिकी थिंक की एक रिपोर्ट के अनुसार शाह की सरकार ने 1968 में परमाणु अप्रसार संधि (NPT) की पुष्टि की एवं सीमित परमाणु गतिविधियां प्रारंभ कर दी।
- 1979 में ईरानी क्रांति के बाद शाह अपदस्थ हो गए एवं देश की महत्वाकांक्षी परियोजना निष्क्रीय हो गई।
- नई सरकार ने परमाणु कार्यक्रम को अत्यधिक महंगा एवं पश्चिमी देशों पर निर्भरता वाला बताया एवं NPT की यह कहकर निंदा की कि समझौते पर हस्ताक्षर करते भविष्य में आने वाली समस्याओं (आर्थिक) के बारे में नहीं बताया गया था।

❖ विचार में परिवर्तन :

- ईरान की सोच में नाटकीय परिवर्तन 1980 के दशक में हुए ईरान–इराक युद्ध के दौरान आया।
- इराक के रासायनिक हथियारों एवं पारंपरिक सैन्य श्रेष्ठता ने ईरान के अस्तित्व पर संकट खड़ा कर दिया था, जिससे उसने परमाणु क्षमता विकसित करने की ओर अग्रसर किया।
- 1990 के दशक में ईरान ने परमाणु क्षमताओं का काफी विस्तार किया।

- ईरान ने 1990 में परमाणु सहयोग हासिल करने के लिए चीन से नजदीकी संबंध स्थापित किए एवं 1995 में रूस के सहयोग से बुशहर रिएक्टर (मध्य–पूर्व का पहला परमाणु संयंत्र) एक समझौते के तहत स्थापित किया।
- शाह के जैसे ही इस्लामिक रिपब्लिक ने भी परमाणु कार्यक्रम को मजबूती देने के लिए अपने वैज्ञानिकों को विदेशों में प्रशिक्षण के लिए भेजा।

❖ हथियार–निर्माण :

- 2002 में ईरान के राष्ट्रीय प्रतिरोध परिषद ने 2 परमाणु सुविधाओं वाले संयंत्रों के अस्तित्व का खुलासा किया, जिसमें एक यूरेनियम संवर्धन स्थल (नतांज) एवं दूसरा भारी पानी (D2O) उत्पादन सुविधा (अराक) शामिल था।
- परिषद ने इस बात पर जोर दिया कि इन सुविधाओं से संभावित रूप से नागरिक के साथ-साथ परमाणु के सैन्य अनुप्रयोग भी शामिल है।

❖ अमद योजना :

- 2000 के दशक में कई महत्वपूर्ण घटनाओं ने ईरान को अपनी परमाणु नीति को पुनर्मूल्यांकन करने का अवसर दिया।
- USA द्वारा इराक पर हमले एवं इराक की बुरी पराजय ने ईरान का क्षेत्रीय डर कम कर दिया, साथ ही ईरान के परमाणु संयंत्रों की खुलासे में अंतर्राष्ट्रीय जांच को बढ़ा दिया।
- ईरान ने अपनी परमाणु नीतियों को ठंडक इसलिए भी प्रदान किया क्योंकि उसे डर था कि USA को उस पर आक्रमण करने का एक बहाना मिल सकता है।
- औपचारिक रूप से ईरान ने 2003 में अमद परियोजना को खत्म कर दिया लेकिन वास्तविक अर्थों में उसने अपने परमाणु कार्यक्रम को प्रत्यक्ष (नागरिक कार्य) एवं गुप्त (विस्फोटक कार्य) में विभाजित कर अनुसंधान जारी रखा।

❖ समझौता :

- 2003 में ईरान में यूरोपीय संघ के तीन देशों (फ्रांस, जर्मनी एवं UK) द्वारा मध्यस्थता किए जाने के बाद IAEA के साथ एक समझौता तो किया, लेकिन उसने कई सूचनाएं गुप्त रख ली।
- 2006 में ईरान में घोषणा की कि उसने यूरोपियन संवर्धता को 3.6% तक प्राप्त कर लिया है, जिसने तनाव को काफी बढ़ा दिया।

- बढ़ते तनाव के बीच PS+1 (चीन, USA, UK, फ्रांस एवं रूस तथा जर्मनी)ने ईरान के यूरोपियन संवर्धन रोकने के लिए एक समझौता प्रस्ताव रखा, लेकिन कूटनीतिक प्रतिरोध के कारण यह असफल हो गया।

❖ ओबामा एवं ईरान :

- 2012 में USA एवं ईरान के बीच एक समझौता हुआ, जो PS+1 का पूरक था।
- उदारवादी नेता हसन रूहानी के कारण USA के प्रयास से ICPOA अस्तित्व में आया, जिसे UNSC द्वारा सर्वसम्मति से अपनाया गया।

❖ JCPOA का उद्देश्य :

- इसका उद्देश्य IAEA के कठोर निगरानी तंत्र से ईरान के ब्रेक–आउट टाइम को बढ़ाना था।
- समझौते के तहत ईरान ने अपने दो–तिहाई सेंट्रीफ्यूज़ को नष्ट कर दिया तथा 97% से ज्यादा समृद्ध यूरेनियम को बाहर भेज दिया।
- उपलब्धियों के बावजूद JCPOA का इजराइल एवं सऊदी अरब जैसे देशों ने यह कह कर आलोचना किया कि यह समझौता ईरान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रमों को संबोधित करने में विफल रहा।
- डोनाल्ड ट्रंप ने इसे अब तक सबसे खराब समझौता करार देते हुए "परमाणु–प्रलय" की ओर ले जाने वाले समझौता बताया।

❖ अनिर्णीत दौर :

- 2018 में ट्रंप ने JCPOA से USA को अलग कर लिया, जिसकी व्यापक आलोचना हुई, लेकिन UK, फ्रांस एवं जर्मनी ने JCPOA के प्रति अपना समर्थन जारी रखा।
- 2018–2020 के दौरान ईरान ने परमाणु, हथियार पाने की दिशा में काफी प्रगति की तथा USA के प्रतिबंधों के खिलाफ अपनी अर्थव्यवस्था को भी अनुकूलित कर लिया।
- ईरान एवं USA दोनों में इस दौर में सत्ता–परिवर्तन हुए, जिसने JCPOA को अनिर्णीत ही रहने दिया।

❖ भविष्य :

- गाजा–इजराइल संघर्ष के दौरान, इजराइल ने ईरान के परमाणु सुविधा स्थल पर हमला किया, जिसका जो बाइडेन ने भले ही विरोध किया, लेकिन डोनाल्ड ट्रंप इजरायल के पक्ष में खड़े दिखे।

- चीन–रूस एवं ईरान की बढ़ती नजदीकियाँ तथा मध्य–पूर्व के तनावपूर्ण हालात एवं ईरान के साथ क्षेत्रीय शत्रुता भूलाकर सऊदी अरब जैसे देशों की बढ़ती नजदीकियों ने आगे की राह मुश्किल बना दी है।
- ऐसे में ईरान शायद ही अपने परमाणु कार्यक्रमों को बंद करने के लिए किसी समझौते का साक्षी होगा।

रिजल्ट मित्र